

भीड़ में अकेले

भीड़ में अकेला खड़ा, मैं सोचता हूँ कभी,
कोई तो हो लक्ष्य, इस ज़िंदगी का अभी,
दूर तो बहत आ गए, गुज़रते हुए सदि,
कोई तो हो लक्ष्य, इस ज़िंदगी का अभी |

सोचा न था, इतना पड़ जाऊंगा अकेला,
जाना न था, छा जाएगा जीवन में अंधेरा,
माँ कहती, बेटा कुछ तो अपनी जिंदगी की फिकर
कर ले,
मैं कहता, पहले जवानी का मज़ा तो ले लें |



Mujeeb Rehman
T8

रह गया अकेला, मैं इस भीड़ में,
साथी सारे बढ गए, अपने जीवन के पढ़ाव में,
अब तो काटने को दौड़ती है ये तनहाई,
मुझे तो जिंदगी ने इस कदर है डराई |

भीड़ में अकेला खड़ा, मैं सोचता हूँ कभी,
कोई तो हो लक्ष्य, इस जिंदगी का अभी,
दूर तो बहुत आ गए, गुज़रते हुए सदि,
कोई तो हो लक्ष्य, इस जिंदगी का अभी |